राग–द्वेष से मुक्त हो जीवनः आचार्यश्री महाश्रमण
जो पदार्थ मिले उसी में संतुष्ट रहने का प्रयास करें
आमेट में आज निकलेगी दो मुमुक्षुओं की शोभायात्रा, शाम को मंगल भावना समारोह का होगा आयोजन

आमेटः 31 जनवरी

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वे अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने राग–द्वेष को छोडने की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए कहा कि अहिंसा की उत्कृष्ट साधना के लिए हमें इसका परित्याग करना होगा। व्यक्ति में द्वेष की भावना उस समय प्रबल होती है जब उसमें अपनी किसी प्रिय वस्तु के प्रति दिलचस्पी बढती है। अगर वह इसके प्रति त्याग की भावना का जीवन में समावेश करें तो द्वेष स्वतः ही समाप्त हो सकता है।

आचार्यश्री ने उक्त उद्‌गार यहां अहिंसा समवसरण में प्रवचन के दौरान व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि किसी व्यक्ति की ओर से की जा रही निन्दा से भी द्वेष का जन्म होता है। प्रशंसा करने से राग भाव आ सकता है। सुन्दर रुप से राग और कुरूप चेहरे से द्वेष का भाव उत्पन्न होता है। जो परम पदार्थों से दूर हो जाए उसे आत्मा की अनुभूति का अहसास होता है। राग–द्वेष के बिना भी जीवन को जीया जा सकता है। मनोज्ञ पदार्थ से व्यक्ति को मन विचलित हो जाता है। इनके प्रति सजगता लाने की आवश्यकता है। यह स्थायी नहीं है।

आचार्यश्री ने कहा कि शरीर एक दिन नष्ट हो जाएगा। संपति और अन्य भौतिक संसाधन भी आज हमारे पास है, कल हो न हो। इस बारे में कहा नहीं जा सकता। राग आना आसान है, लेकिन इसका परित्याग करना बहुत मुश्किल है। इसीलिए राग चला गया तो द्वेष भी चला जाएगा। पूर्णतः वीतराग बनना मुश्किल ही नहीं बहुत कठिन है। उन्होंने इन्द्रियों को भोग का साधन बताते हुए कहा कि मनुष्य को साधना में चित्त लगाने का प्रयास करना चाहिए। व्यक्ति को जो देखने लायक वस्तु है उसे ही देखना चाहिए अन्यथा स्वयं को उससे अदृश्य कर लो। जब आत्मा परमात्मा से साक्षात्कार कर लेती है तो आसक्ति का भाव स्वतः ही छुट जाता है। बिना मतलब की बात को ग्रहण नहीं करना चाहिए। गलत बात की उत्तेजना करने का प्रयास व्यक्ति को नहीं करना चाहिए। आचार्यश्री ने मुनि मोहजीतकुमार के भाग्य को सौभाग्यशाली बताते हुए कहा कि मुनि को आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ और मेरे स्वयं के कार्यक्रम का संयोजन करने का मौका मिला। साधना के प्रति जागरुक रहें। यह आत्म कल्याण

में सहायक है। मुनि सुखलाल ने कहा कि आज उन्हें संघ की सेवा में 68 वर्ष पूर्ण हो गए है। आज ही के दिन आचार्य तुलसी ने दीक्षा प्रदान की थी। उस समय से आज तक संघ की सेवा में लगा हुआ हूं। उन्होंने आरोहण नामक कृति को आचार्यश्री के चरणों में विमोचन के लिए भेंट की।

भावुक हो गए खाब्या

मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के संयोजक धर्मचंद खाब्या मंगलवार को प्रवचन के दौरान उस समय भावुक हो गए जब आचार्यश्री ने आमेट सरीखे नगर में मनाए जा रहे मर्यादा महोत्सव में की गई व्यवस्थाओं की सराहना की। आचार्यश्री ने खाब्या को मंच पर बुलाया और व्यवस्थाओं के लिए साधुवाद दिया। अपने उद्‌बोधन में खाब्या ने तमाम व्यवस्थाओं के लिए आमेट के तेरापंथ जैन समाज के साथ अन्य समाजों को श्रेय देते हुए कहा कि सभी के सहयोग से यह संभव हो सका है। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

मुमुक्षुओं की शोभायात्रा आज

तेरापंथ धर्म संघ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य और साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा के प्रेरणा पाथेय में दो फरवरी को दी जाने वाली दीक्षा समारोह के एक दिन पूर्व बुधवार दोपहर में दो मुमुक्षुओं की शोभायात्रा निकलेगी। शाम को अहिंसा समवसरण में मंगलभावना समारोह आयोजित होगा। प्रचार समिति के सह संयोजक ज्ञानेश्वर मेहता ने बताया कि दीक्षा समारोह में मुमुक्षु हेमाक्षीकुमारी आंचलिया को समण दीक्षा, साथ ही श्रेणी आरोहण कर समणी मुदितप्रज्ञा को साध्वी तथा समण गौतमप्रज्ञ को साधु दीक्षा दी जाएगी। इनके अलावा पूर्वोत्तर राज्य उडीसा के तुषरा गांव निवासी मुमुक्षु ज्योति को दीक्षा दी जाएगी।

संकल्पित जीवन जीएं: साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

आमेट में मेवाड स्तरीय युवती प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन, भाजपा की राष्ट्रीय महासचिव किरण माहेश्वरी ने जताई प्री मेरिज काउंसलिंग सेन्टर की आवश्यकता

आमेट: 31 जनवरी

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने महिलाओं से आह्वान किया कि वे अपने भीतर की ऊर्जा को सामने लाने का प्रयास करें। इसे बढाना, जगाना और समुचित प्रयोग करने की

आवश्यकता है। हमारा जीवन संकल्पित होगा तो अच्छी गति के साथ लक्ष्य की तरफ अग्रसर हो सकेंगे। असंभव को संभव बनाया जा सकेगा और निराशा–हताशा के भाव कभी अपने आत्मविश्वास को डगमगाएंगे नहीं। साध्वी प्रमुखा ने उक्त विचार गांधी चौक के समीप महावीर कॉम्पलेक्स में तेरापंथ महिला मंडल आमेट की ओर से आयोजित मेवाड स्तरीय युवती प्रशिक्षण कार्यशाला मौजूद महिलाओं और युवतियों को प्रेरणा पाथेय प्रदान कर रही थी।

उन्होंने कहा कि आज के परिवेश में महिलाओं को दृष्टि, दिशा, गति और मंजिल का ध्येय बनाकर काम करने की आवश्यकता है। हमारी संस्कृति में महिला का स्वरुप एक शक्ति के रुप में सामने आता है। वह अपनी संकल्प शक्ति से अनेक समस्याओं से लडते हुए मंजिल को प्राप्त करने में सफल हो ही जाती है। हमें भी अपना जीवन इसी तरह से गुंथित करने की जरुरत है। तेरापंथ धर्म संघ के प्रथम गुरु आचार्यश्री भिक्षु के जीवन में कितनी चुनौतियां थी, उन्हें कितनी मुश्किलों से सामना करना पडा। इसके बावजूद उन्होंने धर्म संघ की स्थापना की। इनके बाद के आचार्यों ने इसे नए शिखर की ओर अग्रसर किया। यह उनका ही पुण्य प्रताप है कि आज हमारे में युग के साथ कदम से कदम मिलाकर गतिमान होने की ताकत मिल रही है।

विकृतियों को त्यागें

साध्वी प्रमुखा ने कहा कि महिलाओं को एक कार्यक्रम की क्रियान्विति करके संस्कृति में व्याप्त विकृतियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। अन्धानुकरण और ईर्ष्या की प्रवृति से समाज में विष फैलने की संभावना बनी रहती है। इससे सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। इस तरह की वृति का बहिष्कार किया जाना चाहिए। उन्होंने वर्तमान समय को महिलाओं के लिए अनुकूल बताते हुए कहा कि ऐसी स्थितियां आज से पांच–छह दशक पहले नहीं थी। महिलाएं घर की चारदीवारी तक ही सीमित थी। गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी ने नारी शक्ति को जगाने का प्रयास किया। इसी का परिणाम है कि हमारे संघ में अब महिलाएं भी पुरुषों की भांति हरेक कार्य का मुस्तैदी से करने का प्रयास कर रही है।

परस्पर संवाद आवश्यक

उन्होंने चुटकी लेते हुए कहा कि शादी के पूर्व अपने भावी पति से आठ–आठ घंटे तक मोबाइल पर वार्तालाप करने वाली युवतियों के संबंध शादी के बाद अपने पति के साथ किसी बात को लेकर टूटने में आठ मिनट नहीं लगते। आज तलाक के मामलों में लगातार वृद्धि होती जा रही है। इसका प्रमुख कारण दोनों के बीच परस्पर संवाद का

अभाव है। छोटी–छोटी बातों को सुनने और उसका सामना करने का धैर्य रखें। एक–दूसरे के प्रति विश्वास रखें और कठिनाईयों का मिलकर सामना करने की प्रवृति विकसित करें। हमेशा विनम्र और संयम का भाव मन में रखें।

साहित्य पढने की जिज्ञासा रखें

भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय महासचिव एवं राजसमंद विधायक किरण माहेश्वरी ने महिलाओं से कहा कि वे साधु–संतों के साहित्य को पढने के प्रति अपनी जिज्ञासा रखें। तेरापंथ महिला मंडल की ओर से प्रारंभ किया जा रहा आओ चले गांव की ओर कार्यक्रम बहुत अच्छी सोच का परिणाम है, लेकिन इसके सारगर्भित परिणाम सामने आए। इसकी अपेक्षा है। यह नहीं है कि गांव में जाकर कपडे इत्यादि वितरित कर दिए और हो गया काम खत्म। हमें गांव में जाकर परिवारों से बात करने और उनकी लडकियों को स्कूल भेजने संबंधी जानकारी लेने और उनका निवारण करने की आवश्यकता है। मैं स्वयं इस कार्यक्रम में आपके साथ हूं। गांवों में सरपंच एवं अन्य जनप्रतिनिधियों से पूरा सहयोग दिलाने में तत्पर रहूंगी। उन्होंने माताओं से अपनी बच्चियों को आवश्यक जानकारी देने के दृष्टिकोण से प्री मैरिज काउंसलिंग सेन्टर खोले जाने की पैरवी करते हुए कहा कि महिला शक्ति अब अबला नहीं है। वह अपनी जिम्मेदारियों को समझे और दायित्व निर्वहन के प्रति सचेत रहें। साध्वी कल्पलता ने कहा कि आन–बान और शान के प्रतीक मेवाड की इस धरा पर महिलाओं को संकल्प के साथ काम करने की चेष्टा रखने की आवश्यकता है। लक्ष्य की धुरी पर परिक्रमा करने का प्रयास करें।

तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सूरज बरडिया ने मंडल की ओर से वर्षभर के दरम्यान क्रियान्वित होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी दी। इस अवसर पर उपखण्ड अधिकारी कीर्ति राठौड, महिला मंडल की राष्ट्रीय महामंत्री पुष्पा बैद, श्राविका गौरव प्रेम सिसोदिया, सुशीला कच्छारा, कंचनदेवी बोल्या, आमेट मंडल अध्यक्ष मंजु गेलडा, मंत्री रेणु छाजेड, कोषाध्यक्ष मीना गेलडा, सहमंत्री निवेदिता बाफना, लीला चोरडिया, परामर्शक जतनदेवी, उपाध्यक्ष भगवती मूथा, सुधा मेहता, रेखा खाब्या, रीना रांका, प्रियंका हिरण आदि ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यशाला का कुशल संचालन रेणु छाजेड ने किया।